

SHRI SULTAN SINGH

Shri Sultan Singh is a Progressive & Innovative Fish Farmer. He is the owner of Sultan Fish Seed Farm, Butana Karnal, Haryana serving the nation and farers with his technology and knowledge from last 35 years with aim to bring revolution in the field of fisheries by doing new experiments on different fishes and train other farmers, students and officers of different states and all interested Indians in fisheries sector under the inspiration of 'Jai Jawan Jai Kisan Jai Vigyan'.

2. Born on March 06 , 1963 in Karnal, Haryana, Shri Sultan Singh set up the fish breeding hatchery in 1989 and started supplying fish seeds to farmers surrounding states, State Govt. and Departments. At that time, the Gram Panchayat village ponds were used just for animals taking bath and water collection. Then he started taking those ponds on lease from the Gram Panchayat and started doing fishery in them which generates income to the Gram Panchyat for development of villages. He has trained around 20000 farmers of his state & near by states free of cost who have adopted fish farming and earning their livelihood comfortably. In addition to this, he is doing integrated farming like dairy, crops like rice, sugarcane and started wheat and vegetables and also doing organic poultry farming and organic vegetables using fish waste as manure and fertilizer.

3. Shri Sultan Singh developed RAS(Re-circulatory Aquaculture Technology) and through this technology of Fish, one can produce 30-50 times more fish compared to fish production in open pond farming system. High marketable fishes like sea bass, shingi, chitol etc. can be produced through this technology round the year, which are not possible to grow in open system. This Technology helps in conservation of land and water as same water can be recycled up to 10-15 years in this technology. He increased the yield up to 30 times and also conserved endangered fish species by growing them by this technology. With this technique, farmers having less land can earn more profits with the 90% recycling of water. Another research done by him includes Breeding of Catfish in captivity: He has bred the Catfish (Mystus aor) at his farm ponds which is otherwise impossible due to the habit and habitat of this specie. This specie comes under the category of vulnerable species.

4. Shri Sultan Singh is the first man to develop Early breeding in Catla at commercial level. He has bred the Catla (Catla catla) in the second half of March which otherwise breed from July to September. Hence the technology gives fish farmers three months more time to earn profit from fish and table fish. He developed India's first Fresh water processing plant to be set-up by him: After ten years of continuous efforts he started with the fresh water fish processing plant in Karnal-Haryana (India) to manufacture value added fish products like fish fingers, fish cutlet, fish burger, fish tikka, crunch fish and many other fish products in order to gain more profit instead of selling raw fish to the market like this, he set an example for other farmers that Fishery has also scope like other industries and can be developed to a large extent. He has done many trainings like Training on Integrated Farming (dairy, poultry, fishery, goatry) from China, WUXI TCDC Institute China sponsored by ICAR, Govt. of India in the year 2001. Training from CIFE (Central Institute of Fishery), Mumbai on breeding of Ornamental Fishes, Training from NDRI, KVK (Krishi Vigyan Kendra), Karnal for Fish Breeding and Culture in 1984. Training from CIFA Institute, Bhubaneswar on breeding of Catfish and Ornamental fishes.

5. Shri Sultan Singh is the recipient of numerous awards and honors at National and International Level such as International Quality Summit Award in New York from B.I.D (Business Initiative Directions) in 2006, Jagjeevan Ram Kisan Purskar for 2006, Karma Bhoomi Samman by the Chief Minister of Haryana State organized by the HIF for the year 2008, Ideal Personality Award presented by the Bharat Vikas Parishad for the year 2006, Progressive Farmer Award in for the year 2008 by DWR, Karnal, Haryana and Best Incubate Award by former President of India in the year 2012.

पद्म श्री

श्री सुलतान सिंह



श्री सुलतान सिंह एक प्रगतिशील एवं अभिनव मत्स्यपालक हैं। आप सुलतान फिश सीड फार्म, बुटाना करनाल, हरियाणा के मालिक हैं। आप विभिन्न प्रकार की मछलियों पर नए-नए प्रयोग करके तथा विभिन्न राज्यों के अन्य किसानों, विद्यार्थियों और अधिकारियों तथा मत्स्यपालन क्षेत्र में रुचि रखने वाले सभी भारतीयों को प्रशिक्षण प्रदान करके 'जय जवान जय किसान जय विज्ञान' के नारे से प्रेरणा पाकर मत्स्यपालन के क्षेत्र में क्रांति लाने के उद्देश्य से पिछले 35 वर्षों से अपने तकनीक एवं ज्ञान के माध्यम से राष्ट्र एवं किसानों की अनवरत सेवा करने में लगे हुए हैं।

2. आपका जन्म 06 मार्च, 1963 को करनाल, हरियाणा में हुआ। आपने 1989 में फिश ब्रीडिंग हैचरी की स्थापना की और आस-पास के राज्यों के किसानों, राज्य सरकारों तथा विभागों को फिश सीड की सप्लाई करना शुरू किया। उस समय ग्राम पंचायत के ग्रामीण तालाबों का प्रयोग केवल पशुओं को नहलाने तथा जल संग्रहण के लिए किया जाता था। इसके पश्चात आपने ग्राम पंचायतों से इन तालाबों को लीज पर लेना शुरू किया और उनमें मत्स्यपालन प्रारंभ किया जिससे गांव के विकास के लिए ग्राम पंचायत को भी आय हुई। श्री सुल्तान सिंह ने अपने राज्य तथा आस-पास के राज्यों के लगभग 20000 किसानों को नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया है जिन्होंने मत्स्यपालन के व्यवसाय को अपनाया और वे बड़े अच्छे तरीके से अपनी आजीविका कमा रहे हैं। इसके अलावा श्री सुल्तान सिंह डेयरी, चावल, गन्ना, अनाज तथा सब्जियों जैसी फसलों की एकीकृत खेती भी कर रहे हैं और फिश वेस्ट का खाद्य एवं उर्वरक के रूप में प्रयोग करके वे आर्गेनिक मुर्गीपालन तथा आर्गेनिक सब्जियां भी उगा रहे हैं।

3. श्री सुलतान सिंह ने आरएएस (री-सर्कुलेटरी एक्वाकल्चर टेक्नोलॉजी) विकसित की और इस तकनीक के माध्यम से खुले तालाब में किए जाने वाले मत्स्यपालन की तुलना में मछलियों के उत्पादन में 30-50 गुना और अधिक वृद्धि की जा सकती है। इस तकनीक के माध्यम से वर्षभर सी-बास, सिंगी, चित्तौल इत्यादि जैसी बाजार में अधिक मांग वाली मछलियों का उत्पादन किया जा सकता है जो खुले तालाब में किए जाने वाली मत्स्य उत्पादन प्रणाली में संभव नहीं है। इस तकनीक से भूमि तथा जल की भी बचत होती है क्योंकि इस जल को इस तकनीक के माध्यम से 10-15 वर्षों तक रिसाइकिल किया जा सकता है और इससे उत्पादन में भी 30 गुना तक की वृद्धि होती है तथा इस तकनीक से मछली उत्पादन करके विलुप्त प्राय मछली की प्रजातियों को भी संरक्षित किया जा सकता है। इस तकनीक के माध्यम से कम भूमि वाले किसान भी 90 प्रतिशत पानी रिसाइकल करके अधिक लाभ कमा सकते हैं। श्री सुलतान सिंह द्वारा किए गए अन्य अनुसंधान में ब्रीडिंग ऑफ कैटफिश इन केप्टिविटी शामिल है: आपने अपने खेत के तालाबों में कैटफिश (माइस्तुश ऑर) पालन किया जो इस प्राजति की मछलियों की आदतों एवं निवास स्थान की वजह से अन्यथा संभव नहीं था। मछली की यह प्रजाति विलुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल है।

4. श्री सुलतान सिंह पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने वाणिज्यिक स्तर पर काटला की अर्ली ब्रीडिंग तकनीक विकसित की आपने मार्च के दूसरे पखवाड़े में काटला (काटला काटला) मछली की ब्रीडिंग शुरू की जो अन्यथा जुलाई से सितम्बर माह के दौरान होती है और इस तकनीक की वजह से मत्स्यपालन किसानों को मछली तथा टेबल फिश से लाभ कमाने के लिए तीन और माह का समय मिला। श्री सुल्तान सिंह ने भारत का प्रथम फ्रेश वाटर प्रोसेसिंग प्लान लगाया। आपने कच्ची मछली को बाजार में बेचने की बजाय उससे फिश फिंगर, फिश कटलेट, फिश बर्गर, फिश टिक्का, क्रंच फिश तथा ऐसे ही अन्य वेल्यूएडिड मत्स्य उत्पाद बनाने तथा और अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से दस वर्षों के अथक प्रयास के बाद करनाल - हरियाणा (भारत) में फ्रेश वॉटर फिश प्रोसेसिंग प्लांट में मत्स्य उत्पादन करना शुरू करके अन्य किसानों के लिए इस बात का एक उदाहरण पेश किया कि अन्य उद्योगों की भांति मत्स्यपालन में भी पर्याप्त संभावनाएं हैं और इसे व्यापक स्तर पर विकसित किया जा सकता है। श्री सुल्तान सिंह ने वर्ष 2001 में आईसीएआर, भारत सरकार की ओर से प्रायोजित चीन, डब्ल्यूएक्सआई टीसीडीसी इंस्टीट्यूट चाइना से (90 दिन के लिए) ट्रेनिंग ऑन इंटीग्रेटिड फार्मिंग (दुग्धपालन, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन, बकरी पालन), सजावटी मछलियों की ब्रीडिंग के लिए सीआईएफई (सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरी), मुंबई से प्रशिक्षण, वर्ष 1984 में फिश ब्रीडिंग एंड कल्चर के लिए एनडीआरआई, केवीके (कृषि विज्ञान केन्द्र) करनाल से प्रशिक्षण, कैटफिश तथा सजावटी मछलियों की ब्रीडिंग के लिए सीआईएफए इंस्टीट्यूट, भुवनेश्वर से प्रशिक्षण इत्यादि जैसे कई प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं।

5. श्री सुलतान सिंह को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित किया गया है जिनमें वर्ष 2006 में बीआईडी (बिजनेस इनीसिएटिव डायरेक्शंस) की ओर से न्यूयॉर्क में इंटरनेशनल क्वालिटी समिट अवार्ड, वर्ष 2006 में जगजीवन राम किसान पुरस्कार, वर्ष 2008 के लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री द्वारा प्रदान किया गया एचआईएफ का कर्मभूमि सम्मान, वर्ष 2006 के लिए भारत विकास परिषद द्वारा प्रदान किया गया आइडियल पर्सनेलिटी अवार्ड, डीडब्ल्यूआर, करनाल, हरियाणा द्वारा वर्ष 2008 में प्रदान किया गया प्रोगेसिव फार्मर अवार्ड तथा वर्ष 2012 में पूर्व राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया बेस्ट इन्क्यूवेट अवार्ड शामिल हैं।